**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला ( शीतकालीन अध्ययन सत्र)**

**दिनांक १ दिसंबर २०२१ से १५ दिसंबर २०२१ तक) ।**

**विषय :- “अर्थायाम : गाँधी एवम् आधुनिक भारतीय चिंतकों के धर्म- केंद्रित अर्थ-दर्शन का अंतर्विषयी अनुशीलन ।“**

**Theme – Note**

“ अर्थायाम” ( समाज में न अर्थ का कभी अभाव हो , और न ही कभी अर्थ का अनैतिक प्रभाव हो - इस महत्वपूर्ण अर्थ में ) पं दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रदत्त धर्म- केंद्रित “ समग्रतावादी अर्थ- चिंतन “ है- जो भारतीय अर्थ-  चिंतन परंपरा के मूल में है। लोभ - लालच- शोषण और उपभोक्तावाद पर आधारित उपयोगितावादी वैश्विक अर्थव्यवस्था व उससे पोषित उपभोक्तावादी अपसंस्कृति , आर्थिक विषमताओं की सर्वग्रासी उपस्थिति व अबाधित वर्र्चस्व ने आज विश्व को आर्थिक असमानता, अनैतिकता, शोषण , हिंसा, और भूतापीकरण / जलवायु- परिवर्तन के निरंतर बढ़ते जा रहे ख़तरों के कारण विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है ।

भारत की सनातन धर्मी ज्ञान परंपरा में “ अर्थ “ चार पुरुषार्थों ( धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में से एक प्रमुख पुरुषार्थ रहा है - क्योंकि “ अर्थ “ और “काम” की  “ धर्म- केंद्रित “ युति से ही  “ मुक्ति “ का मार्ग प्रशस्त होता है - व्यष्टि से लेकर समष्टि के स्तर तक ! कहना न  होगा कि इसीलिए वैदिक वांग्मय ,के ऋषियोंसे लेकर कौटिल्य, महात्मा गाँधी, टैगोर, कुमारस्वामी, विनोबा भावे, श्री अरविंद, वीर सावरकर, लाला लाजपत राय, आनंद कुमारस्वामी, Subhas Bose, डा आम्बेडकर, डा राममनोहर  लोहिया , जयप्रकाश नारायण, धर्मपाल, दीनदयाल उपाध्याय, दत्तोपंत ठेंगड़ी, डा एम एस स्वामीनाथन, वंदना शिवा, अमर्त्यसेन, गुरुचरण दास , सुभाष पालेकर , राजीव मल्होत्रा आदि प्रखर चिंतकों के महत्वपूर्ण “ अर्थायाम” के केंद्र में  “धर्म “ ( पंथ, मत या मज़हब के अर्थों में नहीं बल्कि नैतिकता, न्याय, सत्य, अध्यात्म, सदाचार, नीति, कर्तव्य, नैतिक मूल्यों पर आधारित अधिकार व विश्व कल्याण आदि ) रहा है । अत: विश्व कल्याण के लिये आवश्यक है कि अर्थायाम या अर्थ- दर्शन  सनातन नैतिक मूल्यों ( धर्म) पर आधारित हो तभी वह एक शाश्वत ( Sustainable) स्वदेशी, स्वावलंबी, सर्वोदयी ( जो अन्त्योदय से प्रारंभ होता हो) अर्थव्यवस्था में प्रतिफलित होगा।

तदनुसार, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला में दिसंबर २०२१ (१ दिसंबर से १५ दिसंबर २०२१) में एक पंद्रह दिवसीय शीतकालीन अंतर्विषयी अध्ययन सत्र आयोजित किया जा रहा  है। इस अध्ययन सत्र में महात्मा गाँधी, कुमारप्पा, टैगोर,स्वामी विवेकानंद , स्वामी  दयानंद,  विनोबा, आनंद कुमारस्वामी, वीर सावरकर,  लाला लाजपत राय, डा अंबेडकर, डा राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, दीनदयाल उपाध्याय, दत्तोपंत ठेंगड़ी, डा एम एस स्वामीनाथन, वंदना शिवा, अमर्त्य सेन, गुरुचरण दास, सुभाष पालेकर, राजीव मल्होत्रा आदि चिंतकों के अर्थायाम पर विचार विमर्श होगा।

उपर्युक्त अध्ययन सत्र में पूरे भारत से महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के युवा विद्यार्थियों व  अध्यापकों को भाग लेने हेतु आमंत्रित किया जायेगा और अध्ययन सत्र की विषय वस्तु पर आधारित उनके द्वारा प्रेषित “ शोध- पत्र- सारांशों “ ( ५०० शब्द) के आधार पर कुल प्राप्त प्रार्थना- पत्रों में से , २० या २५ प्रतिभागियों को भाग लेने हेतु आमंत्रित किया जाता है । प्रतिभागियों को यात्रा व्यय व  आवास- भोजन की व्यवस्था संस्थान द्वारा नियमानुसार की जाती है। सत्र में व्याख्यान देने हेतु विभिन्न विद्वानों को भी संस्थान नियमानुसार आमंत्रित करता है ।

इस अध्ययन सत्र में भारत सनातन धर्मी अर्थायाम के निम्न क्षेत्रों पर विशेष विचार किया जायेगा। अत: अध्ययन सत्र में भाग लेने वाले इच्छुक प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे महात्मा  गांधी सहित उपर्युक्त चिंतकों ( कोई अन्य भारतीय चिंतक भी ले सकते हैं) के अर्थ दर्शन पर आधारित अपने “ शोधपत्र सारांश “( ५०० शब्द) संस्थान को  11 Nov 2021 (midnight) निर्धारित समय सीमा के अन्दर ही प्रेषित करें। शोध पत्र लेखन हेतु निम्न क्षेत्रों ध्यान देना अपेक्षित है. परंतु विषय वस्तु से संबंधित अन्य क्षेत्र/ भारतीय चिंतक भी अध्ययन हेतु चुने जा सकते हैं)

१. “अर्थ “ और “ धर्म “ पुरुषार्थों का अन्योन्याश्रित अंतर्संबंध : भारत की ज्ञान परंपरा में

२. “अर्थ “ के अर्थ: सनातन धर्मी अर्थ- व्यवस्था के संदर्भ में ।

३. कौटिल्यीय “  अर्थशास्त्र” के अर्थ- दर्शन का वर्तमान तथाकथित वैश्विक अर्थव्यवस्था/ राजनीति  में महत्व

४. स्वराज, स्वदेशी, सर्वोदय / अन्त्योदय पर आधारित अर्थ दर्शन की आवश्यकता

५. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्मक  मानव दर्शन और अर्थायाम

६. कला और साहित्य में अर्थ- विमर्श

७. कृत्रिम बुद्धि, कृत्रिम मुद्रा केंद्रित उत्तराधुनिकी समाज में धर्म- केंद्रित अर्थ- दर्शन का महत्व ( आचार्यवर राजीव मल्होत्रा के योगदान के विशेष संदर्भ में)

८. सनातन धर्मी जीवन पद्धति / सभ्यता / संस्कृति में अर्थ पुरुषार्थ की स्थिति महत्व

९. पर्यावरण और धर्म केंद्रित अर्थ दर्शन

10. Ecological Consciousness and Dharma Centric Economic Vision in Contemporary Contexts of Global Warming and Sustainable Development.पर्यावरणऔरधर्मकेंद्रितअर्थदर्शन

11. Marxist and Gandhian Economic Thought: Conflicts and Convergences

12. Genealogy of Gandhi’s Economic Thought (Thoreau, Ruskin, Tolstoy, Dadabhai Naoroji etc)

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषय जो मुख्य विषय वस्तु पर आधारित हों- शोध- पत्र प्रस्तुतीकरण हेतु अभ्यर्थियों द्वारा लिये जा सकते हैं!

संस्थान के द्वारा सम्यक् संशोधन के उपरांत चयनित शोध पत्र प्रकाशित किये जायेंगे!

//////:::::::////::::::::://////:::::::::::::::///////:::::::;;;;;;;/:::::::::::

शीतकालीन अध्ययन सत्र के लिए आवेदन

* **Prof. Sudhir Kumar (Coordinator, Winter School)**

**Professor of English, DES-Multidisciplinary Research Centre**

**Panjab University Chandigarh-160014**

[**ksudhir62@gmail.com**](mailto:ksudhir62@gmail.com)

* **Dr Balram Shukla, (Co-coordinator, Winter School)**

**Fellow,**

**IIAS Shimla.**[**shuklabalram82@gmail.com**](mailto:shuklabalram82@gmail.com)

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला ( शीतकालीन अध्ययन सत्र)**

**दिनांक १ दिसंबर २०२१ से १५ दिसंबर २०२१ तक) ।**

**विषय :- “अर्थायाम : गाँधी एवम् आधुनिक भारतीय चिंतकों के धर्म- केंद्रित अर्थ-दर्शन का अंतर्विषयी अनुशीलन ।“**

**भाग लेने वाले अभ्यर्थियों की अर्हता**: भारत के महाविद्यालयों एवम् विश्वविद्यालयों  में वर्तमान में स्थित  युवा प्राध्यापक  / शोधार्थी/ स्नातकोत्तर विद्यार्थी

**A. कोरोना संबंधित सूचना: भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागियों को “Double Vaccination” के प्रमाण पत्र की या latest RTPCR की (COVID negative की) scanned कॉपी अपने शोध पत्र सार- संक्षेप के साथ अवश्य संलग्न करनी होगी, अन्यथा उनके चयन पर कोई  विचार नहीं होगा।**

**B. महत्वपूर्ण तिथियाँ:  भाग लेने इच्छुक अभ्यर्थी अपने शोध - पत्र सार संक्षेप (Abstracts only 500 words) निम्नलिखित विषय क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुये, <**[**aro@iias.ac.in**](mailto:aro@iias.ac.in)**>  cc <**[**ksudhir62@gmail.com**](mailto:ksudhir62@gmail.com)**>भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला को अंतिम तिथि: 11 Nov 2021 ( मध्यरात्रि) तक अवश्य पहुँचायें! अन्यथा आवेदन पर विचार नहीं होगा! अभ्यर्थियों अपने एब्स्ट्रैक्ट्स व आवेदन पत्र के साथ अपना बायो डॉटा ( जीवन- वृत्त- जिसमें वर्तमान पता, जिस संस्थान से संबद्ध हों- उसका विवरण व पता, जिस  कोर्स में अध्ययन करते हों - उसका विवरण, ईमेल, मोबाइल नं आदि) भी संलग्न अवश्य करें। कृपया नोट करें कि शोध –पत्र /सार संक्षेप हिन्दी / इंग्लिश मे भेजा जा सकता है ।**

**C. चयनित उम्मीदवारों (20या 25 परिस्थितियों को देखते हुए निर्णय लिया जायेगा) को नवम्बर महीने के तीसरे सप्ताह मे सूचित कर दिया जाएगा। चयनित अभ्यर्थियों के लिये अति महत्वपूर्ण है कि वे अपने शोध–पत्र** **का (2500-4000 words) का पूर्ण प्रस्तुति – पत्र** **दिनांक 25 November 2021 तक अवश्य प्रेषित कर दें! पेपर के साथ Anti-Plagiarism[[1]](#footnote-1) certificate (जिसे Turnitin, Grammarly, Copyleaks ) आदि जैसे सॉफ्टवेयर से लिया जा सकता है)की स्कैन कॉपी होनी चाहिए**

D. 25 नवंबर २०२१ तक (2500 -4000 words तक का शोध- पत्र जो Winter School में प्रस्तुत किया जायेगा)< [aro@iias.ac.in](mailto:aro@iias.ac.in)> cc to < [ksudhir62@gmail.com](mailto:ksudhir62@gmail.com)>अवश्य पहुँच जाना चाहिए! अन्यथा वह स्थान प्रतीक्षा सूची में से किसी अन्य को वरीयता के आधार पर दे दिया जायेगा ।

E. चयनित अभ्यर्थियों द्वारा IIAS Shimla द्वारा प्रेषित / सूचित किये गये सभी निर्देशों (अकादमिक, अनुशासन, प्रशासनिक, व्यवस्था  संबंधी नियमों) का दृढ़ता से पालन करना होगा , अन्यथा आपकी अर्हता तुरंत निरस्त की जा सकती है ।

1. **Plagiarism एक गंभीर शैक्षणिक अपराध है और संस्थान किसी भी स्तर पर दोषी पाए गए उम्मीदवार के चयन/भागीदारी को रद्दकर सकता है।**  [↑](#footnote-ref-1)